Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

लॉरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Lawrence Kohlberg's Moral Development Theory)

लॉरेंस कोहलबर्ग (1927-1987) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने जीन पियाजे (Jean Piaget) के नैतिक विकास सिद्धांत को आगे बढ़ाते हुए "नैतिक विकास के छह चरणों का सिद्धांत" प्रस्तुत किया। उन्होंने इस सिद्धांत को तीन स्तरों और छह चरणों में विभाजित किया। यह सिद्धांत बताता है कि मनुष्य का नैतिक विकास अलग-अलग चरणों में होता है, और प्रत्येक चरण में नैतिक सोच का स्तर बदलता रहता है।

कोहलबर्ग का शोध और तरीका (Kohlberg's Research and Methodology)

कोहलबर्ग ने नैतिक विकास का अध्ययन करने के लिए "हीन्ज की दुविधा" (Heinz Dilemma) नामक एक नैतिक परिदृश्य का उपयोग किया। इसमें एक व्यक्ति (हीन्ज) की पत्नी गंभीर रूप से बीमार थी, और एक दवा ही उसकी जान बचा सकती थी। लेकिन दवा विक्रेता ने बहुत अधिक कीमत मांगी, जो हीन्ज के पास नहीं थी। इसलिए उसने दवा चुराने का फैसला किया।

कोहलबर्ग ने लोगों से पूछा: "क्या हीन्ज को दवा चुरानी चाहिए या नहीं?"

इसके उत्तरों के आधार पर उन्होंने नैतिक विकास के छह चरणों को पहचाना।

कोहलबर्ग के नैतिक विकास के तीन स्तर और छह चरण:

1. पूर्व-परंपरागत स्तर (Pre-Conventional Level) : आत्म-केंद्रित नैतिकता (आयु: 4-10 वर्ष)

यह स्तर छोटे बच्चों में पाया जाता है, जहाँ नैतिकता उनके स्वार्थ और सजा-इनाम पर आधारित होती है।

चरण 1: दंड और आज्ञापालन अभिविन्यास (Obedience and Punishment Orientation)

सही और गलत का निर्णय इस आधार पर किया जाता है कि कोई कार्य करने से सजा मिलेगी या नहीं।

उदाहरण: "अगर मैं झूठ बोलूंगा, तो मुझे डांट पड़ेगी, इसलिए झूठ नहीं बोलूंगा।"

इस चरण में नैतिकता का आधार आत्मरक्षा होती है।

Edit with WPS Office

चरण 2: व्यक्तिगत लाभ और इनाम (Self-Interest or Instrumental Orientation)

नैतिक निर्णय लेने का आधार व्यक्तिगत लाभ होता है।

उदाहरण: "अगर मैं अपने दोस्त की मदद करूंगा, तो वह भी मेरी मदद करेगा।"

इसमें लेन-देन (Give and Take) की सोच विकसित होती है।

2. परंपरागत स्तर (Conventional Level) : समाज-केंद्रित नैतिकता (आयु: 10-18 वर्ष)

इस स्तर पर व्यक्ति समाज के नियमों और दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार नैतिक निर्णय लेता है।

चरण 3: अच्छा बच्चा नैतिकता (Good Boy/Good Girl Orientation)

नैतिकता इस बात पर निर्भर करती है कि समाज हमें कैसे देखता है।

उदाहरण: "अगर मैं माता-पिता की आज्ञा मानूंगा, तो वे खुश होंगे और मुझे अच्छा बच्चा कहेंगे।"

इस चरण में व्यक्ति दूसरों से प्रशंसा पाने के लिए नैतिकता का पालन करता है।

चरण 4: विधि और व्यवस्था (Law and Order Orientation)

नैतिकता कानून, समाज के नियमों और कर्तव्य पालन पर आधारित होती है।

उदाहरण: "चोरी करना गलत है क्योंकि यह कानून के खिलाफ है।"

इस चरण में कानून और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने पर जोर दिया जाता है।

3. उत्तर-परंपरागत स्तर (Post-Conventional Level) : सिद्धांत-केंद्रित नैतिकता (आयु: 18+ वर्ष)

इस स्तर पर व्यक्ति स्वतंत्र रूप से नैतिक निर्णय लेता है, जो व्यक्तिगत मूल्यों और सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित होते हैं।

चरण 5: सामाजिक अनुबंध (Social Contract Orientation)

नैतिकता का आधार यह होता है कि क्या कोई नियम या कानून समाज के हित में है या नहीं।

उदाहरण: "अगर कोई कानून गलत है, तो उसे बदला जाना चाहिए।"

इस चरण में व्यक्ति मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय की बात करता है।

Edit with WPS Office

चरण 6: सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत (Universal Ethical Principles)

नैतिक निर्णय सार्वभौमिक मूल्यों जैसे सत्य, न्याय, समानता और मानव अधिकारों पर आधारित होते हैं।

उदाहरण: "महात्मा गांधी ने अन्यायपूर्ण कानूनों का विरोध किया क्योंकि वे नैतिक रूप से गलत थे।"

इस चरण में व्यक्ति अपने आत्मिक मूल्यों (Ethical Principles) के आधार पर निर्णय लेता है, भले ही यह कानून के विपरीत हो।

महत्वपूर्ण विशेषताएँ (Key Features of Kohlberg's Theory)

1. क्रमिक विकास: नैतिक विकास क्रमबद्ध होता है, और कोई भी व्यक्ति चरणों को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता।

2. संस्कृति और शिक्षा का प्रभाव: शिक्षा और समाज का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। उच्च शिक्षा और नैतिक चर्चा व्यक्ति को उच्च स्तर तक ले जा सकती है।

3. हर कोई अंतिम चरण तक नहीं पहुँचता: अधिकांश लोग परंपरागत स्तर (चरण 4) तक सीमित रहते हैं।

4. नैतिकता और कानून में अंतर: कोहलबर्ग का सिद्धांत बताता है कि नैतिकता केवल कानून का पालन करना नहीं है, बल्कि न्याय और मूल्यों को समझना भी है।

5. गांधी, नेल्सन मंडेला, और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे महान नेता अंतिम चरण (चरण 6) के उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने मूल्यों के लिए कानूनों का भी विरोध किया।

कोहलबर्ग के सिद्धांत की आलोचना (Criticism of Kohlberg's Theory)

1. सांस्कृतिक भिन्नता (Cultural Bias): यह सिद्धांत मुख्य रूप से पश्चिमी समाजों पर आधारित है और अन्य संस्कृतियों में नैतिक विकास अलग हो सकता है।

2. लैंगिक भेदभाव (Gender Bias): कैरल गिलिगन (Carol Gilligan) ने कहा कि कोहलबर्ग का सिद्धांत पुरुषों पर केंद्रित है और महिलाओं की नैतिकता को कम आंकता है।

3. व्यवहार पर ध्यान नहीं (Lack of Behavior Focus): यह सिद्धांत बताता है कि लोग नैतिक निर्णय कैसे लेते हैं, लेकिन यह नहीं बताता कि वे व्यवहार में क्या करते हैं।

निष्कर्ष:

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत यह बताता है कि नैतिकता का विकास एक प्रक्रिया है, जो अनुभवों और चिंतन के साथ आगे बढ़ती है। मनुष्य का नैतिक विकास स्वार्थ से शुरू होकर समाज के नियमों और अंततः सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों तक पहुँचता है। कोहलबर्ग का सिद्धांत बताता है कि सभी लोग इस विकास को एक ही गति से तय नहीं करते, और कुछ लोग उच्च स्तर तक नहीं पहुँचते। यह सिद्धांत शिक्षा, नैतिकता और सामाजिक न्याय को समझने में मदद करता है।

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office